गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २०

बहुत-से लोग कहते हैं कि वे आत्मा को, परम आत्मा को जानना चाहते हैं और हो सकता है वे सच में ऐसा चाहते हों। पर वे अपनी धारणाओं, अपनी आदतों और अपने सभी पुराने जाने-पहचाने ढाँचों को त्यागने के लिए तैयार नहीं हैं, चाहे ये कितने ही विनाशकारी क्यों न हों। वे उन स्थूल या सूक्ष्म चीज़ों के बोझ को त्यागने के लिए तैयार ही नहीं हैं जो उनके मार्ग की बाधाएँ हैं। इससे सत्य को सुनना, सत्य को देखना, सत्य को जानना और सत्य को जीना बड़ा कठिन हो जाता है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ६ "क्रोध से मुक्ति : भाग २," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ८०।